खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय :

खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय ने 1अगस्त 2021 से सरकारी पत्र संख्या 31432/HE, दिनांक 06.08.2021 के अनुसार कार्य करना प्रारंभ किया है। एक सदी से भी ज़्यादा पुरानी इस संस्था की शुरुआत 1856 में ब्रह्मपुर में एक स्कूल के तौर पर हुई थी और 1878 में यह इंटरमीडिएट कॉलेज बन गई। इसका पहले का नाम नेटिव कॉलेज था। खलीकोट के राजा द्वारा 16.5 एकड़ ज़मीन दान करने के बाद 1893 में इसे खलीकोट स्वयंशासित महाविद्यालय का नाम दिया गया। कला और विज्ञान में डिग्री की कक्षाएं 1944 में शुरू की गईं और वाणिज्य और गणित में 1963 से और अन्य विषयों में ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय से संबद्धता के तहत बाद के वर्षों में शुरू की गईं। 1 अगस्त, 2021 से इस संस्थान का कायाकल्प किया गया है और नवाचार, रचनात्मकता और सफलता को बढ़ावा देने के लिए आशा के साथ एक नई यात्रा शुरू की है।

हिंदी विभाग के बारे में :

हिंदी विभाग की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी। विभाग 2002 में हिंदी का स्नातकोत्तर विभाग बन गया। अपने निरंतर विकास में पूर्ववर्ती खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय, ब्रह्मपुर को 1 अगस्त 2021 को खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय में अपग्रेड किया गया है और विभाग पूरे कॉलेज के साथ ओडिशा राज्य के कोने-कोने में हिंदी में यूजी कोर-कोर्स पीजी, एम.फिल. और पीएचडी सीखने का एक अभिन्न अंग बन गया है।

लेख जमा की विधि :

लेख के लिए संभावित लेखकों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और विषयों से संबंधित पेशेवरों से मूल कार्यों की प्रस्तुति आमंत्रित की जाती है। दस्तावेज़ निम्नलिखित प्रारूप को ध्यान में रखते हुए तैयार किए जाने चाहिए :

- शीर्षक सहित सार 300 शब्दों के भीतर, यूनिकोड या कृतिदेव 10 और फ़ॉन्ट आकार 12 होना चाहिए।
- लेख को भुगतान रसीद के साथ 30/01/2025 को या उससे पहले hindidept25@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजा जाना चाहिए।
- भागीदारी और पंजीकरण के लिए कृपया Google फ़ॉर्म भरें: (कंट्रोल +क्लिक)

https://forms.gle/PMQQV3XuFtHBwguM9

सलाहकार समिति

१. प्रो. अजय कुमार पटनायक,
(प्राध्यापक, सेवानिवृत्त, रेवेंशॉ विश्वविद्यालय)
२. प्रो. पद्मिनी साहु
(अध्यक्ष, स्नातकोत्तर विभाग समूह, खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय)
३. डॉ. सुधांशु कुमार नायक
(रीडर, सेवानिवृत्त, खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय)
४. डॉ. निवेदिता साहु
(रीडर, सेवानिवृत्त, खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय)
५. डॉ. कुना पंडा
(रीडर, सेवानिवृत्त, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय)
६. डॉ. उषा राणी रथ
(सहायक प्राध्यापिका, ओड़िया विभाग, खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय)
७. श्री गंगाधर बेहेरा
(सहायक प्राध्यापक, हिंदी, विनायक आचार्य महाविद्यालय)

आमंत्रित वक्ता गण :

१. प्रो. रवीन्द्र नारायण मिश्रा
(प्राध्यापक, सेवानिवृत्त, विश्वभारती विश्वविद्यालय)
२. प्रो. जयंत कर शर्मा
(प्राध्यापक, सेवानिवृत्त, ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय)
३. प्रो. अरुण होता
(प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय)
४. प्रो. स्मरप्रिया मिश्रा
(प्राध्यापक, सेवानिवृत्त, रैवेनशॉ विश्वविद्यालय)
५. डॉ. सुधांशु कुमार नायक
(रीडर, सेवानिवृत्त, खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय)
६. डॉ. निवेदिता साहु (रीडर, सेवानिवृत्त, खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय)
७. डॉ. भगवान बिस्वाल
(सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रायगडा स्वयंशासित महाविद्यालय)
८. डॉ.सुशांत कुमार बिस्वाल
(सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शैलबाला महिला स्वयंशासित महाविद्यालय)
९. डॉ. स्नेहलता दास (सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय)

महोदय/महोदया,

हमें यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे विभाग द्वारा आगत दिनांक ०८ और ०९ फरवरी को **"जातीय अस्मिता एवं हिंदी साहित्य"** विषय पर एक **द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** का आयोजन हमारे विश्वविद्यालय के गणेश हॉल में किया जाएगा। हम आशा करते हैं कि आप इस संगोष्ठी को अपनी उपस्थिति से अनुग्रहित करेंगे।

हिंदी विभाग
खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय
ब्रह्मपुर, गंजाम,ओडिशा, पिन-760001
ईमेल- hindidept25@gmail.com

मुख्य संरक्षक
प्रो. गीतांजलि दाश
कुलपति खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय

संरक्षक
प्रो.पद्मिनी साहु अध्यक्ष,
स्नातकोत्तर विभाग समूह खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय

संयोजक
डॉ. सुस्मिता पटनायक
सहायक प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग

आयोजन सचिव
डॉ. सौम्य रंजन दाश मोबाइल-9436532460

आयोजन समिति सदस्या
श्रीमती पूजा पोलाई (मोबाइल: 6371481387)
आशा भारती (मोबाइल- 7008334475)

विषय की अवधारणा

हिंदी साहित्य ने भारत की राष्ट्रीय पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य राष्ट्रीय पहचान (जातीय अस्मिता) और हिंदी साहित्य के बीच जटिल संबंधों का पता लगाना है, जिसमें यह जांच की जाएगी कि साहित्यिक रचनाएँ भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता की हमारी समझ को कैसे प्रतिबिंबित, प्रभावित और आकार देती हैं।

उद्देश्य:

1. विभिन्न विधाओं और अवधियों में हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय पहचान के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करें।
2. भारत के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मूल्यों को आकार देने और प्रतिबिंबित करने में हिंदी साहित्य की भूमिका की जांच करें। 3. हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय पहचान पर सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रभाव पर चर्चा करें। 4. समकालीन भारत में हिंदी साहित्य के महत्व पर विद्वानों, लेखकों और छात्रों के बीच संवाद की सुविधा प्रदान करें।

प्रस्तावित विषय:

1. हिंदी साहित्य और क्षेत्रीय पहचान का निर्माण।
2. हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति और मूल्यों का प्रतिनिधित्व।
3. हिंदी साहित्य पर उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण का प्रभाव।
4. सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देने में हिंदी साहित्य की भूमिका।
5. हिंदी साहित्य में समकालीन रुझान और चुनौतियाँ तथा राष्ट्रीय पहचान।

संगोष्ठी के महत्वपूर्ण क्षेत्र:

- जातीय अस्मिता एवं हिन्दी कविता
- जातीय अस्मिता एवं हिंदी नाटक
- जातीय अस्मिता एवं हिन्दी उपन्यास
- जातीय अस्मिता एवं हिन्दी कहानी
- जातीय अस्मिता एवं हिन्दी आलोचना
- जातीय अस्मिता एवं हिंदी सिनेमा

पंजीकरण शुल्क :

पंजीकरण संगोष्ठी के विषय से संबंधित सभी शिक्षाविदों, अध्यापकों, शोधार्थी और छात्रों के लिए खुला है। पंजीकरण शुल्क में सम्मेलन किट, नाश्ता, चाय और दोपहर का भोजन शामिल है।

अध्यापक तथा शिक्षाविद : 800/-
शोधार्थी : 500/-
छात्र (अन्य कॉलेज व विश्वविद्यालय के): 300/-
खल्लिकोट ऐकिक विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए शुल्क देयमुक्त है।

भुगतान विवरण :

भुगतान ऑनलाइन किया जा सकता है बैंक खाता: क्रमांक: 5713938394
आईएफएससी कोड: CBIN0283241
MICR कोड: 760016288
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया,
खल्लिकोट कॉलेज शाखा

महत्वपूर्ण तिथियाँ

पंजीकरण और लेख जमा करने की तिथि :
30 दिसंबर 2024 से 30 जनवरी, 2025
पंजीकरण और लेख जमा की अंतिम तिथि:
05 फरवरी 2025
संपूर्ण आलेख जमा करने की अंतिम तिथि:
25 फरवरी 2025
PPT प्रस्तुतीकरण के लिए-
6 फरवरी से पूर्व विभाग के ईमेल में भेजना जरूरी है।
संगोष्ठि की तिथियां: 08 और 09 फरवरी 2025